

e/; खाक ?क्कव्ह द्वताम्रपाशाण युगीन संस्कृति

Mk0 | ꝓkl pln i ky
i kphu bfrgkl] | Ldfr , oa ijkrRo foHkkx
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विगत पाँच दशकों में मध्य गंगा घाटी में किये गये पुरातात्त्विक अन्वेषणों से ताम्रपाषाणिक संस्कृति के बहुत से स्थल प्रकाश में आये हैं। इन स्थलों से उत्तर पूर्वी भारत में ताम्रपाषाणिक संस्कृति का एक नया अध्याय प्रकाश में आया है। ताम्र धातु के ज्ञान और तत्सम्बन्धित तकनीकि fodkl ds uohu ; kxnu I s bl | Ldfr dks inku dh x; h gA bl ; x dh eñHkk. M dyk , oa vU; m | kxk ds fodkl ds vk/kj ij bl | Ldfr dk Lo: i iobrh | Ldfr I s iFkd i gpkuj [krk gA इस संस्कृति के स्थलों में उल्लेखनीय स्थल हैं – उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ tuin ea ijnotkuh] i sy [kokj vkj Hkouh 1/ky 1987% 196&200] tkuij ea , dgkj 1/0 lFky dh [kst i kphu bfrgkl] | Ldfr , oa ijkrRo foHkkx] bykgkckn ds Mk0 t0, u0 i ky] Jh ch0ch0 feJ] , oa Mk0 ekfud pln x|r us 1987 ea dh Fkh bykgkckn ea >| h vkj grki VVh] okjk.kl h ejkt?kkv 1/ukjk; .k , oa jk; 1977 1/ igyknij 1/ukjk; .k , oa jk; 1967 1/ ljk; ekguk 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1967&68% 48&49% deksh 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1963&64% 58% xkthij ea el kuMhg 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1963–64: 57–58), आजमगढ़ में राजा नहुष का टीला 1/uxh 1975% 56&58% cLrh ea cuokjh ?kkv 1/HKV 1970% 78&88% xgyfjgok ?kkv 1/HKV 1970% 78&88% | h ijk 1/proph 1985% 101&108% ygjknok 1/proph 1985% 101&108% jkex<?kkv 1/proph 1985% 101&108% cMk&xko 1/proph 1985% 101&108% vkj xjkj 1/proph 1985% 101&108% cfy; k ea [kj kmhg 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1981&82% 67&70% HkukMhg 1/fi g 1996] xkj [kj ej i kgxkj 1/proph 1985% 101&108% ujgu 1/fi g 1994 o beyhMhg 1/fi g 1990% rFkk fcgkj ds I kju tuin ea fpjkn oeck 1969% 201&211% vkj ek>h 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1983&84% 15&16] bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1984&85% 12&13% iVuk tuin ea ekuj 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1984&85% 11&12% Hkkxyij tuin ea vkfjvi 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1966&67% 6&7% vkj pEik 1/सिन्हा 1978: 15–16), वैशाली जनपद में ppj drçij 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1977&78% 17&18% x; k tuin ea I kuij 1/fi ugk , oa oeck 1970% vkj rkj kmhg 1/bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1981&82% 10&12] bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1982&83% 16&25] bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1983&84% 12&13] bf. M; u vkfdz ksykth% , fjo; 1984&85% 12&13% vkj jkgrkl tuin ea I supkj 1/fi g 1992% 77&84] fl g 2000&2001% 109&118] fl g 2004% bu LFkyka ea I s >| h] grki VVh] jkt?kkv] i gyknij] ljk; ekguk] deksh] el kuMhg] I kgxkj] ujgu] beyhMhg] HkukMhg] /kfj; ki kj] [kj kmhg] fpjkn] ek>h] eu] vkfjvi] pEik]

किया गया है। लघु पाषाण उपकरणों में दन्तुर कटक ब्लेड भी सम्मिलित हैं। हड्डियाँ तथा गिरजाह के उपकरण जैसे गोले अनुभाग गोले हैं। यह इन संस्कृति के लिए विशेषतायें मानी जाती हैं। उत्थनित स्थलों में इस संस्कृति के निचले गोले आकारों में घड़े, नांद, कटोरे और तश्तरियाँ सम्मिलित हैं। जासकता है। मृण्मूर्तियों में चिरांद से उपलब्ध सिर रहित चपटी चिड़िया जिसे शरीर पर छिद्र बनाया जा सकता है। एक आदिम शैली में बनी नारी मूर्ति तथा प्रहलादपुर से उपलब्ध खिलौना गाड़ी विशेष उल्लेखनीय है।

कृष्ण-लोहित (काले-और-लाल) और लाल तथा काले लेप की पात्र परम्परायें इस संस्कृति की चारित्रिक विशेषतायें मानी जाती हैं। उत्थनित स्थलों में इस संस्कृति के निचले गोले आकारों में घड़े, नांद, कटोरे और तश्तरियाँ सम्मिलित हैं। कृष्ण-लोहित पाच-परम्परा के कुछ बर्तनों के भीतरी सतह पर सफेद या कीम रंग से चित्रण बनाया जाता है। बर्तन आकारों में घड़े, नांद, कटोरे और तश्तरियाँ सम्मिलित हैं। इन संस्कृतियों में चिरांद से उपलब्ध सिर रहित चपटी चिड़िया जिसे शरीर पर छिद्र बनाया जाता है। एक आदिम शैली में बनी नारी मूर्ति तथा प्रहलादपुर से उपलब्ध खिलौना गाड़ी विशेष उल्लेखनीय है।

होठदार कटोरे और नांद, बड़े और मध्यम आकार के घड़े तथा साधारण तश्तरियाँ उल्लेखनीय हैं। परांद की नवपाषाणिक संस्कृति की तरह इस संस्कृति में भी टोटीदार बर्तन प्राप्त हुए हैं।

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा किये गये सर्वेक्षण से मध्य गंगा घाटी के प्रतापगढ़ जिले की पट्टी तहसील में लगभग 30 ताम्रपाषाणिक स्थल प्रकाश में आये हैं। अभी तक इनमें एक भी गोला के लघु पाषाण उपकरण, मिट्टी के टुकड़े, ताँबे की अँगूठी तथा पत्थर आदि स्थलों की मध्य पाषाणिक संस्कृतियों से कई सन्दर्भों में जुड़ी हुई प्रतीत होती है। निचली गंगा घाटी की ताम्रपाषाणिक संस्कृति के उत्थनित स्थल पाण्डुराजारदिबि, महिषदल और भरतपुर हैं। पश्चिमी गोला के लिए अद्वितीय अवश्यकता है। ये स्थल इस क्षेत्र की मध्य पाषाणिक संस्कृतियों की ही तरह धनुषाकार झीलों अथवा गोलों की मध्य आविष्कार हुए हैं।

ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों से कई सन्दर्भों में जुड़ी हुई प्रतीत होती है। निचली गंगा घाटी की ताम्रपाषाणिक संस्कृति के उत्थनित स्थल पाण्डुराजारदिबि, महिषदल और भरतपुर हैं। पश्चिमी गोलों के लिए अद्वितीय अवश्यकता है। ये स्थल इस क्षेत्र की मध्य पाषाणिक संस्कृतियों की ही तरह धनुषाकार झीलों अथवा गोलों की मध्य आविष्कार हुए हैं।

Hkj s ; k i hr yky] dkys vks yky vks pedhys yky ik= ijEijk ds crLuka dks fpf=r fd; k x; k gA crLu vdkkjka es dVkj} ukn] Fkkfy; k fNnz Dr crLu rFkk yEcs xys ds ?kMf I feefyr gA vU; I kldfrd I kefxz ka ds vUrxt rkcs ds euds pM+ k ugjuh] I jek I ykb] dVgkMh] gfMM; ka ds ck. kxj fi u] dRk v) jRuka ds euds vks nUrj dVd CyM I s yukt lgh pAषाण उपकरणों का उल्लेख किया जा सकता है।

pedhyh yky ik=&ijEijk rFkk iukjhkj Vkvh ds crLuka ds e/; xak ?kkVh ds vui fLFkfr ds vkkkj ij e/; xak ?kkVh vks fuEu xak ?kkVh dh I Ldfr; ka dks vyx&vyx ekuus ds I Eefr i Lrpf dh x; h gS 196% 103&104% yfdu dN LFkkuh; foLkns dks NkMaj nkuka {ks=ka es , d gh I Ldfr dk foLrkj ekuuk vf/kd rd] xr gS 1970%

मध्य गंगा धाटी के दक्षिण विन्ध्य क्षेत्र में ताम्रपाषाणिक संस्कृति के प्रमाण कई स्थलों से ikr g g ddkgj; k dksMgkj] dksyfMgok] Vksdok] e?kk vksfn iek LFky mYys[kuh; gA ककोरिया की ताम्र पाषाणिक संस्कृति के लोग वृहद पाषाण समाधियों के भी निर्माता थे। इस {ks= dh ik=&ijEijk, a Hkh e/; xak ?kkVh dh gh rjg vks ; gkj I s iPNy rFkk fNnz Dr ck. kxj Hkh vR; f/kd I a; k es ikr g g crLuka ds vdkkj Hkh nkuka {ks=ka es , d gh t s gA लघु पाषाण उपकरण जिनमें दन्तुर कटक ब्लेड भी सम्मिलित हैं भी दोनों ही क्षेत्रों में प्राप्त होते gA bl vkkkj ij dgk tk I drk gS fd e/; xak ?kkVh fuEu xak ?kkVh rFkk mRrjh fol/; क्षेत्र की ताम्रपाषाणिक संस्कृति मूल रूप से एक ही संस्कृति का विस्तार है।

उत्थनित स्थलों से उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर ताम्रपाषाणिक संस्कृति के स्थलों को i k jfehkdk vks ijorh nks oxk es foLkftr fd; k x; k gS feJ vks xjrk 1996% 27] feJ vks feJ 2000% 14&22] 2000% 66&85% ijorh pj.k ds LFkyka es jkt?kkV i Fke ^,*] i gyknij i Fke ^,*] el ku Mhg i Fke ^,*] fpjkn rrih;] ek>h i Fke] rkjkMhg rrih; ^ch* vks I upkj nks ^ch* dks j [kk x; k gA

ताम्रपाषाणिक स्थल मध्य गंगाधाटी में छोटी अथवा बड़ी नदियों के तट पर या धनुषाकार >hyka ds fdrukjs fLFkr gA buds vf/kok LFkyka dk foLrkj ik; % Nks vFkok e/; e vdkkj dk gA foLrkr mR[kuuka ds vHkko es vkokl fu; kstu I EcU/kh iek.k vi fkkdr de ikr gq हैं, लेकिन बाँस बल्ली के निशान से युक्त जली मिट्टी ds VpMks vks xksydkj >k fM+ ka ds फर्शों के प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस काल में लोग प्रायः झोपड़ियों में gh fuokl djrs Fkj ftudh nhokyka dk fuekjk ckl vks cYyh I s fd; k tkrk Fkk vks bl ds Aij feVh dk ekjk yis yxk; k tkrk FkkA I upkj ds mR[kuu I s feVh dh nhokyka I s ?kj cukus dk dN I dr feyrk gA

e/; xakधाटी के ताम्रपाषाणिक संस्कृति के पुरास्थल चाक पर बने हुए रेड वेयर, ब्लैक , .M jM os j vks Cyd fLyIM os j I s ; Dr gA Cyd&, .M&jM os j vks Cyd fLyIM os j ds ik=ka ij gYds I Qsn] dbe vFkok Hkj s jx I s fp= cuk; s x; s gA dHkh&dHkh yky jx ds Hkh crLuka ds Hkrjh vks ckgjh I rg ij js[kh; fp= cuk; s x; s gA yky ik=&ijEijk ds

crLuk*i* j dkys jx ds fp=.k vfhki k; feyrs gA bl ds vfrfjDr vkl at u fof/k l s mRdh. kL vkJ jLI h dh Nki l s crLuk*a* dks vydr fd; k x; k gA l kgxkj k vkJ rkjMhg tJ s LFkyk*a* l s crLuk*a* ds i d tkus ds ckn mRdh. kL dj ds vydj. k cukus ds i ek. k i klr gq gA fofHkUu i dkj ds crLuk*a* ds vdkdj ftue fNNys vkJ xgjs dVkj gkB; Dr vFkok l k/kkj dVkj tशतरियाँ, नांद छोटे अथवा बड़े गले के घड़े, हांडी, लोटों के आकार के घड़े, डिस ऑन स्टैण्ड, gMy ; Dr dMkg*h* vfn mi yC/k gq gA

इन स्थलों से प्राप्त कृषि अस्थि अवशेषों और वानस्पतिक अवशेषों के आधार पर यह कहा त्क l drk g*f* fd e/; x*kk*?kVh dt ताम्रपाषाणिक मानव कृषक और पशुपालक था, लेकिन उसे संभवतः मांसाहार के लिए जंगली पशु-पक्षियों का आखेट और मछली पकड़ने का कार्य करना पड़ता था। कृषि द्वारा उत्पादित अनाजों में चावल, जौ, तीन प्रकार के गेहूँ, मटर, मूँग, सरसों rFkk vJ; frygu l fEfyr gA dVgy] vkJ vkJ ryh tJ h ouLifr; k*o* ds i ek. k i klr होते हैं। पशुओं में कूबड़युक्त बैल, भैंस, भेड़, बकरी, कुत्ता और सुअर के अतिरिक्त विभिन्न i tkr*r*; k*o* ds fgj. k Hkh i klr gq gA eNyh] vkJ i f{k; k*o* dh gfMM; k*o* Hkh i klr gpl gA

I UnHkZ xJFk l ph

ukjk. k , Od0] vkJ Vh0, u0 jk; 1977] bDI d*b*h vJ , V jkt?kV Hkkx&2] okj k. kI h%
cukj l fgUnq; fuol VhA

bf. M; u vfdz ksykth%, fjo; 1967&68] ubz fnYyhA

bf. M; u vfdz ksykth%, fjo; 1963&64] ubz fnYyhA

नेगी, जेऽएसो, नहुष का टीला, 1975, d0l h0 pVvki k/ k; eekfj; y] okY; n] i 0
56&58A

भट्ट, एस0के0, 1970, आर्कियोलॉजिकल एक्सप्लारेशन इन बस्ती डिस्ट्रिक्ट, उत्तर प्रदेश,
i jkrRo 3% 78&88A

prphh] , l 0, u0] 1985] , Mokd vkJ fol/; u fu; kfyyffkd , .M pkYdkfyffkd dYpl z
टू द हिमालय तराई: एक्सकैवेश्वu , .M , DI lykj d bu l j; ikj jktu vkJ mRrj
प्रदेश, मैन एण्ड इनवायरेन्मेंट IX% 101&108

bf. M; u vfdz ksykth%, fjo; 1981&82] ubz fnYyhA

fI Ugk] oh0i h0 vkJ oh0, l 0 oek] 1970] सोनपुर इक्सकैवेश्वन, 1956–1962 पटना: पुरातत्व
और संग्रहालय निदेशालय।

fI g] chi h0, 1992, चैल्कोलिथिक कल्वर आफ इस्टर्न उत्तर प्रदेश आर्कलाजिकल
पर्सपेरिटव इन उत्तर प्रदेश एण्ड पयूचर प्रास्पेक्ट्स, प्रोसीडिंग्स ऑफ द सेमिनार, (राकेश
तिवारी सम्पादक) पृ० 77–84, लखनऊ: उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व संगठन।

fI g] chi h0] 2000&2001] LVstst vkJ dYpj y Moyi el/ bu n fefMy x*kk* lyu&,
dI LVMh vkJ l upkj] i kx/kkj 11% 109&118A

एरडसी, जार्ज, 1985, सेटिलमेंट आर्क्यलॉजी ऑफ द कौशाम्बी रीजन, मैन एण्ड

International Journal of Research in Social Sciences

Vol. 8, Issue 12, December - 2018,

ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081

Journal Homepage: <http://www.ijmra.us>, Email: editorijmie@gmail.com

Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

buok; jues V vd 9 i0 66&79A

fl g] vjfoln dekj] 1993] LVMh vND e\\$/sj; y dYpj vND n xxVd lyu bu n

QLVl मिलियन बीसी०, डी०फिल० उपाधि के लिए प्रस्तुत अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, पृ० 160,
okj.kl h% ch0, p0; ॥A

दासगुप्ता, पी०सी०, 1964, एक्सकैवेशन ऐट पांडुराजारढिबि, कलकत्ता: डायरेक्टर ऑफ

vkdykthA